सत्संग परमसंत पुष्करदयाल जी महाराज

दुर्गापुर, दिनांक 26 नवम्बर 2017

एक सतगुरू ही सच है, उसी को पकड़ो, तुम तर जाओगे। अगर संसार को पकड़ोगे तो संसार में ही डूब जाओगे। रिश्ते–नाते सब झूठे हैं। संसार के सभी रिश्ते प्रारब्ध कर्मों के लेन देन के रिश्ते हैं। कोई बहन बनती है, कोई बेटा बनता है, कोई बीबी बनती है, कोई पति बनता है। ये रिश्ते क्यों बनते हैं? क्योंकि हमारे पिछले जन्मों में कोई ना कोई इनके साथ रिश्ता रहा है और इनके साथ हमारा कुछ लेन देन अधूरा रह गया है। उस लेन देन को पूरा करने के लिए हम संसार में आते हैं। हमारा इस संसार में कोई रिश्तेदार नहीं है। सिर्फ एक ही रिश्तेदार है, वो है सतगुरू। सतगुरू के अलावा हमारा इस संसार में कोई रिश्तेदार नहीं है। अगर रिश्तेदार होते, तो हमको छोड़कर नहीं जाते। मैं 4 साल का था, मेरी माँ मुझे चली गई। अब मैं माँ को क्या समझूँ? क्या माँ मेरी रिश्तेदार थी? 8 साल पहले मेरी बीबी चली गई। क्या बीबी रिश्तेदार है? बीबी भी रिश्तेदार नहीं है। वो कौनसा रिश्तेदार है, जो हमारा साथ नहीं छोड़ता? वो है एक सतगुरू, एक मालिक। उसी को पकड़ो। इसका मतलब ये नहीं है कि हमको अपने रिश्तेदारों को छोड़कर भाग जाना है। हमने ये जन्म क्यों लिया है? क्योंकि हमारे पूर्व जन्मों में कुछ कर्म अधूरे रह गए। उन्हीं कर्मों को पूरा करने के लिए इस जन्म में आ गए हम। अगर तुम्हारे घर में कोई बेटी जन्म लेती है। तो उसने तुम्हारे कर्म काटने के लिए जन्म ले लिया। क्योंकि उसके साथ तुम्हारा कुछ लेन देन बाकी रह गया। और वो अपना लेन देन पूरा करके जाएगी। वो तो अपना लेन देन पूरा करके जाएगी, लेकिन हमारा तो कर्म काट कर गई ना। तो हमारे घर में बेटा जन्म ले या बेटी जन्म ले। तो इसको ऐसे समझो कि वो हमारे कर्म काटने के लिए आए हैं। तो फिर इस संसार के रिश्ते क्या रहे? सब अपना–2 कर्म पूरा करने के लिए आए हैं। संसार के लिए आप जितने भी आँसू बहाते हैं, वो सब नाली में जाते हैं। क्योंकि हम जो आँसू संसार के लिए बहाते हैं, संसार तो हमारा है नहीं, क्योंकि एक–2 करके छोड़ जाते हैं। इसलिए हमारे आँसू बेकार गए। आँसू बहाने हैं तो उसके लिए बहाओ, जो हमेशा हमारे साथ रहेगा। जो हमारा साथ कभी नहीं छोड़ेगा। वो है एक सतगुरू। और जो सतगुरू के लिए आँसू बहाता है, सतगुरू एक–2 बूँद का हिसाब देता है। देरी भी नहीं करता। मेरे गुरू मेरे घर पर 15 साल रहे। एक दिन वो चोला छोड़कर गए। तो मैं सारी रात रोता रहा उनके लिए। सुबह–2 जब मेरी आँख खुली तो, एक आदमी मेरे दरवाजे पर खड़ा है। मैंने पूछा तुम कैसे आए? वो कहने लगा तुम्हें पता नहीं मानव दयाल जी महाराज यहाँ एक महीने से हैं। मैं उनसे मिलने आया हूँ। लेकिन मुझे रास्ता नहीं मालूम। इसलिए मैं तुम्हारे पास आया हूँ। मैंने मोटर साईकिल पर बैठाया उसको, ओर पहुँच गए मानव दयाल जी महाराज की कोठी पर 21 सेक्टर। और मैंने मानव दयाल जी महाराज की कोठी में पैर रखे, फिर मैं रोज ही पैर रखता गया। जब तक वो थे, मैं रोज ही जाता रहा। ये क्या था? जो मैं सारी रात अपने गुरू के लिए रो रहा था। उसने मेरे एक–2 बूँद का हिसाब दे दिया। उसी टाईम। बेटा तू रो मत, मैं कहीं गया नहीं हूँ। मैं यहीं हूँ 21 सेक्टर में। जब मैं कमरे में घुसा, दरवाजे के पास खड़ा हो गया। महाराज की नजर मुझ पर गई, उन्होने इशारा किया और बोले मेरे पैर दबाओ। मैं पैर दबाने के लिए बैठ गया और अंत तक पैर ही दबाता रहा। नतीजा क्या हुआ? ये जो आज मैं इस पवित्र गददी पर बैठा हूँ, ये उन्हीं की गद्दी है। उन्होने मुझे अपनी गद्दी पर बैठा दिया। ये किस चीज का नतीजा है? मैंने गुरू के लिए आँसू बहाये थे। और उसने मुझे एक–2 बूँद का हिसाब दे दिया। आपको एक बात और बताऊँ, मैंने अपनी बीबी के लिए एक भी आँसू नहीं बहाया। बीबी से मैं प्रेम करता था, वो मुझसे प्रेम करती थी। लेकिन जब उसने चोला छोड़ा, उसके लिए मैंने एक भी आँसू नहीं बहाया। क्यों? वो संसार था।

सतगुरू आज भी मेरे साथ है। उसने कभी मुझे छोड़ा नहीं। लेकिन बीबी ने मुझे छोड़ दिया। क्यों? क्योंकि बीबी संसार है। इसलिए मैंने संसार के लिए एक भी आँसू नहीं बहाया। अगर मैं आँसू बहाता, तो आँसू कहाँ जाते? बीबी गई, आँसू भी चले जाते। कोई फायदा नहीं था, उन आँसुओं को बहाने का। संसार गया, संसार के पीछे रोना क्या? सतगुरू जाए तो उसके लिए रोना चाहिए। एक–2 बूँद का हिसाब देगा। ये संसार के जितने भी रिश्ते नाते हैं, सब झूठे नाते हैं। क्योंकि वो हमारा साथ छोड़ जाते हैं। लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि हमको रिश्ते निभाने नहीं हैं। वो रिश्ते हमको निभाने हैं। क्यों? क्योंकि वो हमारे कर्म हैं। जितने भी हमारे रिश्ते हैं उनको हम कर्मों की टोकरी में साथ लाए हैं। और हमको कर्मों की टोकरी खाली करनी है। बेटी आई है तो उसको हमें पढ़ाना पडेगा, उसका घर बसाना पड़ेगा। नहीं किया तो? हमारे और भी कर्म बढ़ गए। हमारे कर्मों की टोकरी और भी भारी हो गई। इसलिए हमें सारे काम पूरे करने होगें। सारे रिश्ते निभाने होंगें। नहीं निभाए तो कर्मों की टोकरी और भी भारी और जन्म मरण का चक्कर चलता रहेगा। शब्दानंद जी महाराज कहते थे one mark less, one year more, यानि परीक्षा में हमको 100 में से 33 नंबर लाने हैं। अगर हमारे 32 नंबर आ गए। तो एक साल फिर से वही किताबें, वही अध्याापक, वही कक्षा, एक साल और। इसी तरह अगर हमारी कर्मों की टोकरी में एक कर्म भी बाकी रह गया। तो फिर से वही संसार, वही नौकरी, वही पापड़ बेलना। ये मनुष्य जन्म बहुत अनमोल है। मनुष्य जन्म के लिए देवता भी तरसते हैं। लेकिन हमने मनुष्य जन्म लेकर क्या किया? कबीर साहब कहते हैं– भजन बिन बाबरे, तेने हीरा सा जन्म गवांया। तुमने भगवान का नाम नहीं लिया, और तुमने ये हीरा सा जन्म बेकार कर दिया। जब हमारे ऊपर कोई मुसीबत आती है, तो हम भगवान का नाम लेते हैं। बाकी दिन ऐशो आराम भोग विलास में जीवन व्यतीत करते हैं।

दुख मे सुमिरन सब करें, सुख में करे ना कोई।
जो सुख में सुमिरन करे, तो दुख काहे को होय।।

हम दुख में भगवान को याद करते हैं, सुख में याद नहीं करते हैं। भगवान को हर समय याद करो, तुम्हें कभी दुख नहीं होगा। मनुष्य पानी का एक बुलबुला है। हवा निकल गई, सब कुछ खत्म। उसी पर हमको अहंकार है। हम सारी उम्र भर माल धन दौलत इकट्ठा करते रहते हैं, लेकिन जब संसार से जाते हैं तो सबकुछ यहीं छोडकर जाते हैं। हमारे कपडे भी उतार लिए जाते हैं। जैसे नंगे आए थे, वैसे ही नंगे चले जाते हैं। तो ये सारा संसार यहीं रह जाने वाला है, कुछ भी साथ जाने वाला नहीं है। लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि आप कुछ मत करो। हमको करना है, घर में टी.वी. भी रखनी है, फ्रिज भी रखना है, गाड़ी भी रखनी है। लेकिन किसी चीज को अपना मत समझो। तुम्हारा कुछ नहीं है। क्यों? हवा निकल गई, तो कपड़े भी उतार लेंगे। सबकुछ भोगो, ईमानदारी से धन कमाओ, ईमानदारी से खर्च करो। लेकिन हर समय भगवान को याद करो। खाना खाते समय, कपड़े पहनते समय, नौकरी करते समय, व्यापार करते समय, हर समय उस मालिक को याद रखो। फिर तुम्हारी जिंदगी में कोई कष्ट नहीं आएगा। जब तुम सब कुछ भगवान का समझकर काम करेंगे, अगर गाड़ी का ऐक्सीडेंट हो जाता है, तो तुम्हारे मन में यही भाव रहेगा कि गााड़ी तो मालिक की थी, मेरी गाड़ी नहीं थी। भगवान की गाड़ी थी, वही ले गया। आपको कोई दुख नहीं होगा। आप सुखी रहोगे। इस संसार में कुछ भी अपना मत समझो। जो भी कुछ है वो भगवान का है, और है भी उसी भगवान का। सच्ची बात भी यही है कि सबकुछ भगवान का है। इस संसार में कुछ भी नही है हमारा। एक शायर ने कहा है– देखी जमाने की यारी, बिछडें सभी बारी बारी। एक–2 करके सब साथ छोड जाते हैं। सिर्फ सतगुरू ही है जो हमारा कभी साथ नहीं छोड़ता। दुख में सुख में, हमेशा हमारे साथ रहता है। उसी को पकड़ो, तुम तर जाओगे।

। राधास्वामी।